Shraddh Vidhi Mool aur Vidhi Kaumudi Namak Tika ka Bhashantar

Folder No.	022197
Granth Name	Shraddh Vidhi
Author	Ratnashekharsuri
Publisher	Jain Bandhu Printing Press
Edition	1
Year	1930
Pages	820

श्राद्धविधि मूल और विधिकौमुदीनामक टीका का भाषान्तर

फोल्डर नं.	०२२१९६
ग्रन्थ	श्राद्ध विधि
लेखक	रत्नशेखरसूरि
प्रकाशक	जैन बंधु प्रिन्टींग प्रेस
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९३०
पृष्ठ	८२०

मुख्य टाइटल
अनुक्रमणिका ---------- १
टीकाकारकृत मंगलाचरण ---------- १
मंगलादि ---------- २
इस ग्रंथमें आये हुए छ द्वारों के नाम ---------- ४
भद्रकपने पर शुकराज की कथा ---------- १२
नाम स्थापना द्रव्य और भाव वे चार प्रकार के श्रावकका स्वरूप---------- १२१
दिनकृत्य प्रकाश-१ ---------- १३०
पृथ्वादि पांच तत्त्वों का तथा चन्द्रसूर्यनाडी का स्वरूप... ---------- १३३
धान्य के बीजपने का काल ---------- १६०
नवकारसी तथा ग्रंथिसहित पच्चखानका स्वरूप और फल ---------- १७६
स्नान करनेकी विधि---------- १९३
महानऋद्धि के साथ भगवंतको वंदना करने को जाने पर दशार्णभद्र राजा की कथा ---------- २०५
अंगपूजा का स्वरूप ---------- २१९
जिनप्रतिमा की तीन अवस्था ---------- २३७
पूजा में धारण करने योग्य दशत्रिक आदि का स्वरूप ---------- २५५
जिनमंदिर को जाने का विचार आदि में होनेवाला फल ---------- २६९
देवकी बृहद्भाष्योक्त पांच प्रकारकी आशातना ---------- ३०३
ज्ञानद्रव्य तथा गुरुद्रव्य का स्वरूप ---------- ३२६
गुरुवन्दन विधि और गुरुसाक्षी से पच्चखान करने का और पच्चखानका फल ---------- ३४२
आजीविका करने के सात उपाय ---------- ३७१
ऋण न रखने के विषय में ऋण भवांतर में भी देना पडता है... ---------- ३९३
विश्वासघात करनेके ऊपर राजपुत्रकी कथा ---------- ४१३
परदेश जाते भाग्यसाली मनुष्य साथ में होवे तो सुख होता है... ---------- ४३१

धर्मविरुद्ध का स्वरूप ---------- ४६३
भोजन की रीति और सुपात्रदान की युक्ति उसके फल व दानके दूषण भूषण ---------- ५२३
सुपात्रदान और रपरिग्रहपरिमाणव्रत ऊपर रत्नसारकुमार का चरित्र ---------- ५२७
भोजन दि करते समय साधर्मिककी भक्ति और दीनजनों पर अनुकंपा करना तथा पोष्यकी सम्हाल लेना ---- ६११
रात्रिकृत्य प्रकाश-२ ---------- ६२५
पक्खीप्रतिक्रमण चतुर्दशीको करना कि पूर्णिमाको इसका खुलासा ---------- ६३०
श्रावकने घरके मनुष्यों को धर्मोपदेश करना उसका स्वरूप ---------- ६४५
पर्वकृत्य प्रकाश-३ ---------- ६६०
पर्वदिनों में पौषध, ब्रह्मचर्य, अनारंभ... ---------- ६६०
पर्वतिथि में पौषध करने पर धनेश्वर श्रेष्ठी की कथा ---------- ६७४
चातुर्मासिक कृत्य प्रकाश-४ ---------- ६८३
हर एक चतुर्मासी और विशेष कर वर्ष चतुर्मासी में नियम ग्रहण करने का स्वरूप ---------- ६८३
वर्षकृत्य प्रकाश-५ ---------- ६९६
संघपूजादि वर्ष कृत्यों की संख्या और निर्देश ---------- ६९६
महापूजा का स्वरूप ---------- ७१४
आलोयणा किसके पास लेना ऊसका स्वरूप ---------- ७२१
जन्मकृत्य प्रकाश-६ ---------- ७३३
रहने का स्थान कैसा चाहिये उसका स्वरूप ---------- ७३३
कैसे घरमें रहना उसका स्वरूप ---------- ७४३
जिनप्रतिमा बनवाने का स्वरूप ---------- ७५१
कैसी प्रतिमा पूजने के योग्य है उसका स्वरूप ---------- ७६९
यावज्जीव समिकत पालने तथा अणुव्रत पालने का स्वरूप ---------- ७७९
ग्रंथकर्त्ताकी गुर्वावलि ---------- ७९२